प्रधान हिन्दी
बी० ए० पार्ट-I

प्रथम-पत्र

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज

संध्या सुन्दरी (निराला)

प्रश्न : 'संध्या सुंदरी' कविता के आधार निराला जी के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : निराला की कविता 'संध्या सुंदरी' हिन्दी कविता में सौन्दर्य की दृष्टि से अद्भुत कविता है। इस कविता में कवि ने संध्या को मानवी का रूप प्रदान किया है। उस कविता में निराला जी ने एक ऐसी योजना तैयार की है जिसे शब्दों के माध्यम से नहीं बल्कि अनुभूति के माध्यम से ही जाना जा सकता है। यहाँ ध्वनित होता है कि संध्या स्वभाव से शान्त प्रकृति की है। सखि-का साथ में होना यह सूचित करता है कि वह अभी कुमारी है। इसी प्रकार उन्होंने संध्या के लिए 'छाँह' शब्द का प्रयोग किया है जिससे पता चलता है कि संध्या पतली है। उपर्युक्त पंक्तियों में निराला ने संध्या का मानवीकरण कर सौन्दर्य का जिस रूप का परिचय दिया है वह श्लाघनीय है।

शाम होते ही जिस प्रकार अंधकार का आँचल धरती पर धीरे-धीरे पसरने लगता है उस समय वातावरण में शांति छा जाती है। संध्या रूपी परी के होठों पर मुस्कुराहट है किन्तु होंठ कुछ गंभीर है। यह संध्या के नीरवता का प्रतीक है।

संध्या के समय प्रकृति अलसा जाती है यानी वह आलस्य की भाँति फैलती ही जाती है। यहाँ पर कवि ने संध्या को सजीव बना दिया है। उसमें मानवीय गुण भर दिए हैं। संध्या एक छाया की तरह आकाश से धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतर रही है।

आज उसके हाथों में कोई वीणा नहीं, यानी वह चुपचाप आ रही है। लगता है वह कोई अनुराग से भरा कोई गीत गा रही है। संध्या के आने से सरोवर में खिलनेवाली कमलिनी भी उसकी 'चुप-चुप' की आवाज से चुप हो गयी है।

P. T. O

अपने सौन्दर्य पर गर्व करने वाली नदी भी अपनी आवाज मद्धम कर चुप है, अचल, अटल हिमालय की चोटियाँ भी गहन घाटियों में सोया हुआ प्रतीत होता है। प्रलयंकारी बादलों के गर्जन में, समुद्र के भयंकर तथा उद्दण्ड लहरें भी किनारे से टकरा कर बस 'चुप-चुप' की ध्वनि ही बोल रही है।

इस प्रकार कवि निराला ने संध्या के माध्यम से पूरी प्रकृति की सजगता को अपनी कविता के माध्यम से बाँध लिया है। चुप-चुप का शब्द पूरे वातावरण में गुंजायमान हो रहा है। इस 'चुप' शब्द के सिवा पूरे वातावरण में कहीं कुछ नहीं। अर्थात संध्या में सारा जीवन विश्राम कर रहा है, अपनी थकावट को दूर करने के लिए मानों अपने हाथ में शराब ले लिया हो। यह संध्या सभी जीवों को अपनी गोद में सुलाती है तथा अपनी मदहोशी से विस्मृति के सपने में डाल देती है। कहने का अर्थ यह कि संध्या गहरी होने पर रात के समय सभी प्राणी सो जाते हैं और चिन्ताओं से मुक्त होकर सपने देखने लगते हैं। आधी रात के सन्नाटे के बाद संध्या भी धीरे-धीरे खो जाती है। रात बीतते-बीतते कवि भी संध्या से प्रेम करने लगता है और उसकी बिदाई पर अनायास ही विरह से भर जाता है। इस प्रकार संध्या और विहाग के राग फूट पड़ते हैं। इस प्रकार संध्या कवि के गीतों को जन्म देती है। निराला की इस कविता में सौंदर्य का अनुपम दर्शन होता है। यह निराला की एक श्रेष्ठ कविता।